Women's Studies Research Centre,
Kurukshetra University, Kurukshetra
(Established by the State Legislature Act-XII of 1956)
("A+" Grade, NAAC Accredited)

Panel Discussion
Generation Equality: Realizing Women's Rights
6th March 2020

REPORT

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन शोध केन्द्र द्वारा 6 मार्च 2020 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसका शीर्षक रहा जेनरेशन इक्वालिटी : रियलाइजिंग वूमंस राइट्स। इस परिचर्चा का उद्देश्य प्रतिभागियों को समाज में भेदभाव खत्म कर लैंगिक समानता लाने तथा एक संतुलित परिवार, संतुलित समाज बनाने हेतु प्रेरित करना था ताकि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा विश्व में लैंगिक समानता स्थापित करने के लक्ष्य को आगे बढ़ाने में सभी की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। लैंगिक समानता सिर्फ संवैधानिक प्रावधानों से संभव नहीं बल्कि इसके लिए सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा संस्कृतिक हर क्षेत्र में प्रयास आवश्यक हैं। अतः इस परिचर्चा में लैंगिक समानता के विभिन्न मुद्दों पर प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित किया गया। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की डीन अकाादमिक अफेयर प्रो0 मंजुला चौधरी, डीन सामाजिक विज्ञान संकाय प्रो0 नीरा वर्मा, महिला अध्ययन शोध केन्द्र की निदेशिका प्रो0 सुदेश, इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलोजिकल स्टडीज़ की निदेशिका प्रो0 विभा अग्रवाल, वॉटनी विभाग से प्रो0 नीलू सूद, विधि विभाग से प्रो0 अमित लूदरी ने इस परिचर्चा में भाग लिया। परिचर्चा के माध्यम से कुछ प्रश्नों के उत्तर ढूंढने के प्रयास किये गये जैसे लैंगिक समानता का क्या अर्थ है? भारतीय संविधान में प्रदान की गई लैंगिक समानता को भारत कहॉ तक प्राप्त कर पाया है? भारत में महिलाओं को क्या पर्याप्त आर्थिक अवसर मिल पा रहें है? वैदिक समय में महिलाओं के अधिकार क्या थे तथा आज उनमें क्या परिवर्तन आया है, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में महिलाओं का क्या स्थान है एवं लैंगिक समानता को साकार करने में उच्चतर शिक्षण संस्थाओं की क्या भूमिका हो सकती है?

परिचर्चा का प्रारम्भ करते हुए प्रो0 सुदेश ने जनरेशन इक्वालिटी के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा किए गए प्रयासों को उजागर किया तथा परिचर्चा के थीम को स्पष्ट किया। उन्होंने उन सभी अधिकारों की भी चर्चा की जो लैंगिक समानता की दिशा में आवश्यक हैं। प्रश्नों के उत्तर ढूँढते हुए प्रो0 विभा अग्रवाल ने कहा कि वैदिक काल अर्थात् स्वर्ण युग में कहीं भी महिलाओं के साथ भेदभाव के साक्ष्य नहीं मिलते हैं बल्कि उन्हें ज्ञानदात्री, ब्रह्मवादिनी, बुद्धिप्रदाता, कुशल राजनीतिज्ञ, न्यायकत्री, पवित्र और पूज्यनीय माना गया है। यहॉ तक की उपनिषद्, गीता और लौकिक साहित्य में भी महिलाओं को आदरणीय समझा गया है परन्तु विभिन्न कारणों से हमारी सांस्कृति के पतन के कारण आज यह स्थिति हो गई है। परिवर्तन के लिए प्रत्येक स्त्री को शिक्षित ओर बुद्धिमत्ती बनना होगा।

प्रो0 मंजुला चौधरी ने कहा कि नारीत्व और पुरुषत्व दो तरह के मूल्यों में समाज में पुरुषत्व मूल्यों को महत्ता दी जाती है। समानता लाने के लिए नारीत्व के मूल्यों को भी पहचान मिलनी चाहिए। बेहतर समाज के

निर्माण के लिए दोनों मूल्यों में संतुलन होना चाहिए। उच्चतर शिक्षा से जुड़े होने के नाते हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम अपने आस–पास के कम पढ़े हुए लोगों को लैंगिक समानता तथा लड़कियों के प्रति उचित दृष्टिकोण अपनाने हेतु प्रेरित करें।

प्रो0 अमित लूदरी ने कहा कि हॉलाकि संविधान में अनेक प्रावधान उपलब्ध हैं जो महिलाओं के अधिकारों का संरक्षण करते हैं परन्तु यह सभी प्रावधान एक माध्यम मात्र हैं, हमें सर्वप्रथम अपना दृष्टिकोण बदलना होगा तथा लड़कियों को भी अवसरों तथा संसाधनों के उपयोग की छूट देनी होगी तभी जेनरेशन इक्वालिटी स्थापित हो पायेगी।

प्रो0 नीलू सूद ने विज्ञान तथा प्रोद्यौगिकी के क्षेत्र में महिलाओं की अदृश्यता पर ध्यान केंद्रित करते हुए कहा उन्हें अपनी इच्छा शक्ति, आत्मविश्वास व क्षमताओं के माध्यम से पहचान बनानी चाहिए तथा अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। प्रो0 नीरा वर्मा ने कहा कि आर्थिक समानता लैंगिक समानता का आधार है। संविधान तथा सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ हमें महिलाओं की स्थिति का ऑकलन करने में मदद करती हैं परन्तु हमें पूर्ण रूप से आंकड़ों पर निर्भर नहीं होना चाहिए। हमारा दृष्टिकोण यह हो कि व्यक्तिगत रूप से मैं समाज के लिए क्या कर सकती हूँ। अंत में प्रो0 सुदेश ने विश्वविद्यालय की महिला प्राध्यापकों को समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने की अपील की तथा भविष्य में भी केंद्र की गतिविधियों से जुड़े रहने के लिए कहा ताकि बेहतर समाज के निर्माण में सभी भागीदार बन सके। परिचर्चा में छात्राओं ने प्रश्नों के माध्यम से लैंगिक समानता के मुद्दे पर अपनी जिज्ञासाएं जाहिर की।

इस परिचर्चा में विश्वविद्यालय के 100 से अधिक विद्यार्थियों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों, विभागाध्यक्षों तथा डीन ने भाग लिया। इस अवसर पर डीन आर्ट्स एवं लेग्वेजेस प्रो0 शुचि स्मिता शर्मा, डा0 कविता, डा0 आर0के0 सूदन, डा0 अनीता यादव, डा0 अनिता दुआ, डा0 अनुरेखा, डा0 वन्दना दवे आदि उपस्थित थे।